

सापेक्ष अर्थशास्त्र करेगा ग्लोबल वार्मिंग का समाधान – मुनि सुखलाल

मुनि सुखलाल ने जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में आयोजित सापेक्ष अर्थशास्त्र पर चतुर्थ संवाद में उपस्थित विद्वानों को संबोधित करते हुए कहा कि अर्थ के दो पहलू हैं – उपभोग व प्रतिष्ठा। यदि दोनों में संतुलन व समन्वय नहीं होगा तो ग्लोबल वार्मिंग, हिंसा, भुखमरी, गरीबी आदि कष्टों से मानवमात्र नहीं बच सकता। इसके लिए उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से दी जा रही ट्रेनिंग के बारे में भी जानकारी दी।

मुनि महेन्द्रकुमार ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सुख को उपभोग से जोड़कर देखना ही दुःखों का मूल कारण है। जिन देशों में स्वास्थ्य सेवाएं हैं वहां का एच.डी.आर भी अच्छा है परन्तु वहां भी मनुष्य आंतरिक रूप से खुश नहीं है। अर्थशास्त्र बिना मनुष्य के अधुरा है और सापेक्ष अर्थशास्त्र मानवमात्र को केन्द्र बिन्दू मानता है। अन्तरात्मा को अर्थशास्त्र से जोड़ के देखना है।

जैन विश्व भारती के सहयोग से सापेक्ष अर्थशास्त्र पर आयोजित चतुर्थ संवाद की पूर्व भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मुनि जयंत कुमार ने बताया कि वर्तमान समाज में बढ़ती हिंसा उपभोगवादी मनोवृत्ति व आर्थिक विषमताओं को उजागर कर रही है। इस आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नई आर्थिक अवधारणा 'सापेक्ष अर्थशास्त्र' को साकार किया है। जो संतुलित सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक व आर्थिक विकास पर आधारित है। यह अवधारणा अर्थशास्त्र के आर्थिक चिंतन को धर्म की आध्यात्मिकता से जोड़ती है तथा अर्थशास्त्र में मानवीय मूल्यों का समावेश करती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने इसे महावीर के अर्थशास्त्र की संज्ञा देते हुए, अवधारणा का प्रतिपादन किया। अवधारणा की यात्रा का प्रथम पड़ाव नई दिल्ली में २०१६ के चतुर्मास के दौरान आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 'इकोनोमिक्स ऑफ नॉन वायलेंस : विजन ऑफ ए सस्टेनेबल वर्ल्ड' था, तत्पश्चात् द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 'अहिंसा का अर्थशास्त्र: सांस्कृतिक मूल्य व नैतिकता' उदयपुर में हुआ। तृतीय स मेलन 'अहिंसा का अर्थशास्त्र के संदर्भ में सापेक्ष अर्थशास्त्र' विषय पर रूट में आचार्य महाप्रज्ञ के चतुर्मास के दौरान जयपुर में हुआ जो महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुआ, जहां सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा पर गहन चिंतन मंथन हुआ। 'सापेक्ष अर्थशास्त्र अवधारणा के विकास में देश-विदेश के विद्वतजनों, समाज विज्ञानियों व अर्थशास्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मुनि जयंत ने बताया कि राजनीतिक क्षेत्र से एस.के.

सिंह, तत्कालीन राज्यपाल राजस्थान, गुलाबचन्द कटारिया, गृहमंत्री राजस्थान सरकार, शिवचरण माथुर, तत्कालीन राज्यपाल, आसाम, पं. नवलकिशोर शर्मा, तत्कालीन राज्यपाल गुजरात, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र से पदमभूषण प्रो. वी.एस. व्यास, प्रो. आशीष बोस, अन्तर्राष्ट्रीय डेमोग्राफर व प्रधानमंत्री सलाहकार व सदस्य, राष्ट्रीय जनसं या आयोग, डॉ. अशोक बाफना, निदेशक आईआईएलएम, यदुवेन्द्र माथुर, योजना सचिव, राजस्थान सरकार, प्रो. उदय पारीक, प्रबंधन विशेषज्ञ, प्रो. योगेश अटल, प्रबुद्ध समाज वैज्ञानिक, प्रो. माइकेला हाइनी, मनोविज्ञान विभाग, यॉर्क विश्वविद्यालय, कनाडा, सिस्टर जयंती, ब्रह्माकुमारी वर्ल्ड स्पिरिच्युलिटी युनिवर्सिटी, यूरोप, प्रो. मार्सिया रियोस, निदेशक, यॉर्क विश्वविद्यालय, कनाडा, प्रो. एल.एन. नाथुरामका, प्रबुद्ध अर्थशास्त्री, आर.एल. वाजपेयी, समाज वैज्ञानिक, प्रो. दयानन्द भार्गव, वैदिक विद्वान बनार्ड ई. मीयर, प्रबुद्ध अमेरीकी अर्थशास्त्री आदि आचार्य महाप्रज्ञ के अर्थशास्त्र के नये प्रारूप पर कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि संगोष्ठी के आयोजन में एस.आई.डी., एन.एच.आर.डी., जयपुर चेप्टर, आई.सी.ई.एन.एस., अणुव्रत आई.सी.सी.आर एअर्डीसीटीई व जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित हो रहा है। जैन विश्व भारती के अहिंसा भवन में आयोजित चतुर्थ संवाद में पहुंचे यातनाम अर्थशास्त्री नाथुरामका आर.एल. वाजपेयी, प्रो. दयानन्द भार्गव ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा को आज जनता की अवधारणा बताते हुए इसे विश्व व्यापी बनाने पर जोर दिया।

समणी शशिप्रज्ञा, समणी रमणिय प्रज्ञा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की मंत्री श्रीमती वीणा बैद, प्रो. एस.आर. तातेड़, डॉ. अशोक बाफना आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

द्वितीय सत्र में आईआईएलएम के विद्यार्थी अजय शर्मा, कुलदीप मिश्रा, सतीश कुमार अहिर, नितेश भारद्वाज, स्वपनिल शर्मा, शिवानी शर्मा, सुदीप पूनिया व सामेदेंडा ने इस विषय पर अपने विचार रखे। विद्यार्थियों ने आज की अराजकता, हिंसा, गरीबी आदि समस्याओं को दूर करने के लिए कहा कि सामाजिक व नैतिक मूल्यों को महँव आज के युवा को समझना होगा। इसी के साथ प्रौद्योगिकी का सही व उपयुक्त रूप में उपयोग युवा को समझना होगा। इसी के साथ प्रौद्योगिकी का सही व उपयुक्त रूप में उपयोग करना होगा। शिक्षा में नवीनीकरण के साथ-साथ इसके सिर्फ डिग्री बांटने का साधन बनने से रोकने की जरूरत है। मितव्ययता का महत्व व प्राकृतिक

संसाधनों का समुचित सदुपयोग की जरूरत है व प्रत्येक मनुष्य को अपनी ये जि मेदारी समझनी होगी।

रोजगार प्रशिक्षण प्रदर्शनी का किया अवलोकन

लाडनूँ ख नव बर। स्थानीय जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा परिसर में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा देश स्तर पर संचालित विभिन्न अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों तथा महिला मण्डल अहमदाबाद, हैदराबाद व लाडनूँ के रोजगार प्रशिक्षण प्रदर्शनी का गहन अवलोकन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ तथा युवाचार्य महाश्रमण ने किया। अवलोकन के समय अनेक संत एवं समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। अवलोकन क्रम में संस्था के राष्ट्रीय संयोजक भीखमचन्द नखत तथा विशिष्ट मार्गदर्शक डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने विभिन्न केन्द्रों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी के विशिष्ट तथ्यों का उल्लेख किया तथा केन्द्र प्रभारियों ने भी रोजगार प्रशिक्षक विषयक प्रेरणादायी तथ्यों तथा जरूरतमंदों द्वारा किए जा रहे अर्थोपार्जन तथा इससे समाज में बढ़ते सकारात्मक सोच को रेखांकित किया। आचार्य महाप्रज्ञ तथा युवाचार्य महाश्रमण ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के केन्द्रों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को भी देखा तथा प्रसन्नता व्यक्त की। स्वरोजगार सृजन की दिशा में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों की बढ़ती उपयोगिता राष्ट्र स्तर पर शांति सदभावना लाने की दिशा में कारगर सिद्ध हो रही है ऐसा भाव प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अनेक महानुभावों ने प्रकट किये।

त्वां अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर ५ से

लाडनूँ ख नव बर।

प्रेक्षा इंटरनेशनल द्वारा जैन विश्व भारती प्रांगण में प्रेक्षाध्यान के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के निर्देशन में त्वां अन्तर्राष्ट्रीय शिविर का आयोजन ५ नव बर से षण्ण नव बर तक किया जायेगा। उक्त जानकारी देते मुनि जयंतकुमार ने बताया कि इस शिविर में रसिया, यूक्रेन, कजाकिस्तान, जर्मनी, जापान, अमेरिका, हॉलेण्ड, कूर्गन आदि देशों के स्त्र जन भाग लेंगे।

मुनि जयंत ने बताया कि प्रेक्षाध्यान के प्रति सात समुद्र पार के लोगों में विशेष आकर्षण है। विदेशी लोग इस शिविर से प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेकर अपने देशों में प्रेक्षाध्यान के सेंटर संचालित करते हैं। इन सेंटरों में सैकड़ों व्यक्ति प्रेक्षाध्यान का अयास करते हैं। मुनि ने बताया कि प्रेक्षाध्यान

प्रतिस्पर्धात्मक जिंदगी में तनाव से छुटकारा का सशक्त माध्यम है। इसकी उपयोगिता को जितना विदेश में रहने वाले इस्तेमाल करते हैं उतना इस देश के नहीं करते। इन शिविरों के द्वारा विदेशी सैलानियों में भारत की अध्यात्म भूमि के प्रति सकारात्मक सौच विकसित हुई है और वे वर्ष में कई बार आने का मानस रखने लगे हैं।

इन शिविरों के अलावा भी प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में विदेशी प्रवास करते हैं

जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह

जीवन विज्ञान से होता है बालकों का निर्माण : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, खनव बर।

पीछले शनिवार को जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में जीवन विज्ञान अकादमी की तरफ से पुरस्कृत किया गया। जैन विश्व भारती के मंत्री भीखमचन्द्र पुगलिया, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव जे.पी.एन. मिश्रा ने युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित इस पुरस्कार वितरण समारोह में एकांकी प्रस्तुति में प्रथम स्थान प्राप्त जिनकूदेवी जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय द्वितीय लाडमनोहर बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय को तृतीय मारवाड़ विद्यालय के मोमेन्टों एवं पुरस्कार राशि प्रदान की। गीत गायन प्रतियोगिता में विमल विद्या विहार की छात्रा शिखा दूगड़ प्रथम, द्वितीय विवांक द्विवेदी एवं तृतीय लाडमनोहन विद्यालय की प्रिया खटेड़ रही। रेली में प्रथम जिनकूदेवी जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय, द्वितीय लाडमनोहर बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय तृतीय महावीर जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय ने जीता। नि बन्ध में सुमन प्रथम, चन्द्रकांता द्वितीय, पूजा जांगीड़ तृतीय स्थान पर रही।

प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ.जे.पी.एन मिश्रा, अरूणा सोनी, सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. जिनेन्द्र जैन व सीताराम लेड़ी थे।